रविवार 21 नवंबर, 2021

विषय — आत्मा और शरीर

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 18 : 26

"शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता।"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 132: 11, 13, 17, 18**
भजन संहिता 78: 70-72

11 यहोवा ने दाऊद से सच्ची शपथ खाई है और वह उससे न मुकरेगा: कि मैं तेरी गद्दी पर तेरे एक निज पुत्र
को बैठाऊंगा।
13 क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को अपनाया है, और उसे अपने निवास के लिये चाहा है॥
17 वहां मैं दाऊद के एक सींग उगाऊंगा; मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक तैयार कर रखा है।
18 मैं उसके शत्रुओं को तो लज्जा का वस्त्र पहिनाऊंगा, परन्तु उस के सिर पर उसका मुकुट शोभायमान
रहेगा॥
70 फिर उसने अपने दास दाऊद को चुन कर भेड़शालाओं में से ले लिया;
71 वह उसको बच्चे वाली भेड़ों के पीछे पीछे फिरने से ले आया कि वह उसकी प्रजा याकूब की अर्थात
उसके निज भाग इस्त्राएल की चरवाही करे।
72 तब उसने खरे मन से उनकी चरवाही की, और अपने हाथ की कुशलता से उनकी अगुवाई की॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 24 : 3, 4 (*से*;)

3 यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ सकता है? और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा हो सकता है?
4 जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध है।

2. 1 शमूएल 16 : 1, 4 (*से.*), 5 (और उसने पवित्र किया), 7, 11 (*से 3rd* ,), 12, 13 (*से 1st* .), 14, 23

1 और यहोवा ने शमूएल से कहा, मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के लिये तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भर के चल; मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूं, क्योंकि मैं ने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिये चुना है।
4 तब शमूएल ने यहोवा के कहने के अनुसार किया, और बेतलहेम को गया।
5 उसने कहा, हां, मित्रभाव से आया हूं; मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूं; तुम अपने अपने को पवित्र करके मेरे साथ यज्ञ में आओ। तब उसने यिशै और उसके पुत्रों को पवित्र करके यज्ञ में आने का न्योता दिया।
7 परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डील की ऊंचाई पर, क्योंकि मैं ने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।
11 तब शमूएल ने यिशै से कहा, क्या सब लड़के आ गए? वह बोला, नहीं, लहुरा तो रह गया, और वह भेड़-बकरियों को चरा रहा है।
12 तब वह उसे बुलाकर भीतर ले आया। उसके तो लाली झलकती थी, और उसकी आंखें सुन्दर, और उसका रूप सुडौल था। तब यहोवा ने कहा, उठ कर इस का अभिषेक कर: यही है।
13 तब शमूएल ने अपना तेल का सींग ले कर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से ले कर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा। तब शमूएल उठ कर रामा को चला गया॥
14 और यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा।
23 और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब तब दाऊद वीणा ले कर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दुष्ट आत्मा उस में से हट जाता था॥

3. 1 शमूएल 23: 15-17 (*से 2nd*,)

15 और दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरे प्राण की खोज में निकला है। और दाऊद जीप नाम जंगल के होरेश नाम स्थान में था;
16 कि शाऊल का पुत्र योनातन उठ कर उसके पास होरेश में गया, और परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाढ़स दिलाया।
17 उसने उस से कहा, मत डर; क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पड़ेगा; और तू ही इस्राएल का राजा होगा, और मैं तेरे नीचे हूंगा; और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है।

4. 1 शमूएल 25: 29 (*से*;)

29 और यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और तेरे प्राण का ग्राहक होने को उठा है, तौभी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर यहोवा की जीवनरूपी गठरी में बन्धा रहेगा, और तेरे शत्रुओं के प्राणों को वह मानो गोफन में रखकर फेंक देगा।

5. 1 शमूएल 24 : 1 (*से 2nd* ,), 3 (वह)-6, 8, 10-12, 16-18, 20

1 जब शाऊल पलिश्तियों का पीछा करके लौटा, तब उसको यह समाचार मिला, कि दाऊद एनगदी के
जंगल में है।
3 जब वह मार्ग पर के भेड़शालों के पास पहुंचा जहां एक गुफा थी, तब शाऊल दिशा फिरने को उसके भीतर
गया। और उसी गुफा के कोनों में दाऊद और उसके जन बैठे हुए थे।
4 तब दाऊद के जनों ने उस से कहा, सुन, आज वही दिन है जिसके विषय यहोवा ने तुझ से कहा था, कि मैं
तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूंगा, कि तू उस से मनमाना बर्ताव कर ले। तब दाऊद ने उठ कर शाऊल के
बागे की छोर को छिपकर काट लिया।
5 इसके पीछे दाऊद शाऊल के बागे की छोर काटने से पछताया।
6 और अपने जनों से कहने लगा, यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा काम
करूं, कि उस पर हाथ चलाऊं, क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है।
8 उसके पीछे दाऊद भी उठ कर गुफा से निकला और शाऊल को पीछे से पुकार के बोला, हे मेरे प्रभु, हे
राजा। जब शाऊल ने फिर के देखा, तब दाऊद ने भूमि की ओर सिर झुका कर दण्डवत की।
10 देख, आज तू ने अपनी आंखों से देखा है कि यहोवा ने आज गुफा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था; और
किसी किसी ने तो मुझ से तुझे मारने को कहा था, परन्तु मुझे तुझ पर तरस आया; और मैं ने कहा, मैं
अपने प्रभु पर हाथ न चलाऊंगा; क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है।
11 फिर, हे मेरे पिता, देख, अपने बागे की छोर मेरे हाथ में देख; मैं ने तेरे बागे की छोर तो काट ली, परन्तु
तुझे घात न किया; इस से निश्चय करके जान ले, कि मेरे मन में कोई बुराई वा अपराध का सोच नहीं है।
और मैं ने तेरा कुछ अपराध नहीं किया, परन्तु तू मेरे प्राण लेने को मानो उसका अहेर करता रहता है।
12 यहोवा मेरा और तेरा न्याय करे, और यहोवा तुझ से मेरा पलटा ले; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा।
16 दाऊद शाऊल से ये बातें कह ही चुका था, कि शाऊल ने कहा, हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है?
तब शाऊल चिल्लाकर रोने लगा।
17 फिर उसने दाऊद से कहा, तू मुझ से अधिक धर्मी है; तू ने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैं ने तेरे साथ
बुराई की।
18 और तू ने आज यह प्रगट किया है, कि तू ने मेरे साथ भलाई की है, कि जब यहोवा ने मुझे तेरे हाथ में कर
दिया, तब तू ने मुझे घात न किया।
20 और अब, मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा को जाएगा, और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर
होगा।

6. 2 शमूएल 22: 1, 3, 7, 21, 25, 27 (*से*;)

1 और जिस समय यहोवा ने दाऊद को उसके सब शत्रुओं और शाऊल के हाथ से बचाया था, तब उसने
यहोवा के लिये इस गीत के वचन गाए;
3 मेरा चट्टानरूपी परमेश्वर है, जिसका मैं शरणागत हूँ, मेरी ढाल, मेरा बचाने वाला सींग, मेरा ऊंचा गढ़,
और मेरा शरण स्थान है, हे मेरे उद्धार कर्त्ता, तू उपद्रव से मेरा उद्धार किया करता है।
7 अपने संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा; और अपने परमेश्वर के सम्मुख चिल्लाया। और उसने मेरी बात को
अपने मन्दिर में से सुन लिया, और मेरी दोहाई उसके कानों में पहुंची।

21 यहोवा ने मुझ से मेरे धर्म के अनुसार व्यवहार किया; मेरे कामों की शुद्धता के अनुसार उसने मुझे बदला दिया।
25 इसलिये यहोवा ने मुझे मेरे धर्म के अनुसार बदला दिया, मेरी उस शुद्धता के अनुसार जिसे वह देखता था।
27 शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता; और टेढ़े के साथ तू तिरछा बनता है।

7. मत्ती 5 : 8

8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 280 : 26 (भगवान)-30

ईश्वर, मनुष्य की आत्मा और सभी अस्तित्व की, अपने स्वयं के व्यक्तित्व, सद्भाव, और अमरता में सदा रहने वाले, मनुष्य में इन गुणों को लागू करते हैं, - मन के माध्यम से, कोई बात नहीं।

2. 70 : 12-16

दिव्य मन सभी पहचानों को, घास के एक ब्लेड से लेकर एक तारे तक, विशिष्ट और शाश्वत के रूप में रखता है। प्रश्न हैं: भगवान की पहचान क्या हैं? जीवात्मा क्या है? क्या जीवन या आत्मा का गठन की गई चीज में होता है?

3. 71 : 6 (आत्मा)-9

आत्मा, या सभी का दिव्य सिद्धांत, आत्मा के निर्माण में नहीं है। जीवात्मा आत्मा, ईश्वर का पर्याय है, परिमित रूप से बाहर का रचनात्मक, शासी, अनंत सिद्धांत, जो केवल प्रतिबिंबित होता है।

4. 467 : 17-23

विज्ञान आत्मा, अंतर आत्मा को प्रकट करता है, जैसा कि शरीर में नहीं है, और भगवान मनुष्य में नहीं, बल्कि मनुष्य द्वारा परिलक्षित होता है। इससे कम में अधिक नहीं हो सकता। विश्वास है कि कम में अधिक हो सकता है एक त्रुटि है कि विफल हो जाता है। यह आत्मा विज्ञान में एक प्रमुख बिंदु है, कि सिद्धांत इसके विचार में नहीं है। आत्मा, अंतर आत्मा, मनुष्य में सीमित नहीं है, और कभी भी भौतिक नहीं है।

5. 478 : 3-13

नश्वरता के भीतर आपके पास आत्मा या अमरता का क्या प्रमाण है? प्राकृतिक विज्ञान की शिक्षाओं के अनुसार भी, मनुष्य ने कभी भी आत्मा या आत्मा को शरीर छोड़ते या उसमें प्रवेश करते नहीं देखा है। नश्वर विश्वास के दावे को छोड़कर, वास करने वाली आत्मा के सिद्धांत का क्या आधार है? इस घोषणा के बारे में क्या सोचा जाएगा कि एक घर बसा हुआ था, और एक निश्चित वर्ग के लोगों द्वारा, जब ऐसे व्यक्तियों को कभी भी घर में

जाने या उससे बाहर निकलने के लिए नहीं देखा गया था, और न ही वे खिड़कियों से भी दिखाई दे रहे थे? शरीर में आत्मा को कौन देख सकता है?

6. 300 : 23-4

आत्मा ईश्वर है, जीवात्मा; इसलिए जीवात्मा पदार्थ में नहीं है। यदि आत्मा पदार्थ में होती, तो परमेश्वर का कोई प्रतिनिधि नहीं होता, और पदार्थ परमेश्वर के समान होता। यह सिद्धांत कि आत्मा, आत्मा, बुद्धि, पदार्थ का वास है, स्कूलों द्वारा पढ़ाया जाता है। यह सिद्धांत अवैज्ञानिक है। ब्रह्मांड दिव्य पदार्थ या मन को दर्शाता है और व्यक्त करता है; इसलिए ईश्वर को केवल आध्यात्मिक ब्रह्मांड और आध्यात्मिक मनुष्य में देखा जाता है, जैसे सूर्य प्रकाश की किरण में दिखाई देता है जो इससे निकलता है। ईश्वर केवल उसी में प्रगट होता है जो जीवन, सत्य, प्रेम, - परावर्तित को दर्शाता है, जो ईश्वर की विशेषताओं और शक्ति को प्रकट करता है, यहां तक कि जैसे कि मानव समानता दर्पण पर फेंकी जाती है, दर्पण के सामने व्यक्ति के रंग, रूप और क्रिया को दोहराता है ।

7. 477 : 20 (पहचान)-31

पहचान आत्मा का प्रतिबिंब है, जीवित सिद्धांत, प्रेम के विविध रूपों में प्रतिबिंब है। आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। आत्मा कभी भी किसी भी चीज को हीन नहीं कर सकती

मनुष्य आत्मा की अभिव्यक्ति है। भारतीयों ने अंतर्निहित वास्तविकता की कुछ झलकियाँ पकड़ीं, जब उन्होंने एक निश्चित सुंदर झील को "द ग्रेट स्पिरिट की मुस्कान" कहा। मनुष्य से अलग, जो आत्मा को व्यक्त करता है, आत्मा एक अस्तित्वहीन होगा; मनुष्य, आत्मा से तलाकशुदा, अपना अस्तित्व खो देगा।

8. 337 : 2 (पुरुष)-4

...मनुष्य, परमेश्वर को प्रतिबिम्बित करता हुआ, अपना व्यक्तित्व नहीं खो सकता; लेकिन भौतिक संवेदना, या शरीर में एक आत्मा के रूप में, अंधे नश्वर आध्यात्मिक व्यक्तित्व की दृष्टि खो देते हैं।

9. 216 : 30-5

मन की भौतिक धारणा को भौतिकता में छोड़ दो, और एक मन है, यहाँ तक कि भगवान भी; इसके लिए मन अपनी समानता बनाता है विज्ञान द्वारा प्रदान की गई समझ के माध्यम से मनुष्य की पहचान का नुकसान असंभव है; और इस तरह की संभावना की धारणा यह निष्कर्ष निकालने की तुलना में अधिक बेतुका है कि व्यक्तिगत संगीत स्वर सद्भाव के मूल में खो गए हैं।

10. 261 : 21-27

शरीर, या पदार्थ से भावना को अलग करें, जो केवल मानव विश्वास का एक रूप है, और आप ईश्वर का अर्थ, या अच्छा, और अपरिवर्तनीय और अमर की प्रकृति को जान सकते हैं। समय और इंद्रियों के परिवर्तन से अलग होकर, आप न तो जीवन की ठोस वस्तुओं और अंत को खो देंगे और न ही अपनी खुद की पहचान को।

11. 265 : 10-15

किसी भी तरह से, आत्मा के लिए कुछ भी होने का यह वैज्ञानिक अर्थ, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन मनुष्य में बढ़े हुए व्यक्तित्व, विचार और कर्म का व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति।

12. 323 : 6-8 (*से 2nd* ,), 32-6

प्रेम के उत्तम उदाहरणों के माध्यम से, हमें धार्मिकता, शांति और पवित्रता की ओर अग्रसर होने में मदद मिलती है।

छोटे बच्चे के रूप में बनने और नए के लिए पुराने को छोड़ने की इच्छा, रेंडरर्स ने उन्नत विचार के ग्रहणशील होने का सोचा। झूठे स्थलों को छोड़ने की खुशी और उन्हें गायब देखने के लिए खुशी, - यह स्वभाव परम सद्भाव को बढ़ाने में मदद करता है। भाव और आत्म की शुद्धि ही प्रगति का प्रमाण है। “धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।”

13. 467 : 1-16

प्रश्न। — आत्मा के विज्ञान की क्या मांगें हैं?

उत्तर। —इस विज्ञान की पहली मांग है, "दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥" यह "मैं" आत्मा है। T इसलिए आज्ञा का यह अर्थ है: आपके पास कोई बुद्धि नहीं है, कोई जीवन नहीं है, कोई पदार्थ नहीं है, कोई सत्य नहीं है, कोई प्रेम नहीं है, इसके अलावा जो आध्यात्मिक है। दूसरा उसके जैसा है, "तू अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्रेम रखना।" यह अच्छी तरह समझा जाना चाहिए कि सभी पुरुषों का एक मन, एक ईश्वर और पिता, एक जीवन, सत्य और प्रेम होता है। यह तथ्य स्पष्ट होते ही मानव जाति अनुपात में परिपूर्ण हो जाएगी, युद्ध बंद हो जाएगा और मनुष्य का सच्चा भाईचारा स्थापित हो जाएगा। कोई अन्य देवता नहीं, कोई दूसरा नहीं, बल्कि एक ही मार्गदर्शक का मन, मनुष्य ईश्वर की समानता है, शुद्ध और शाश्वत है, और उसके पास वह मन है जो मसीह में भी था।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6